शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव

(संस्कृत विभाग)

विभागीय प्रतिवेदन

(सत्र–2015–16)

डॉ. शंकर मुनि राय
विभागीय प्रभारी

संस्कृत विभाग

डॉ. आर.एन. सिंह
प्राचार्य

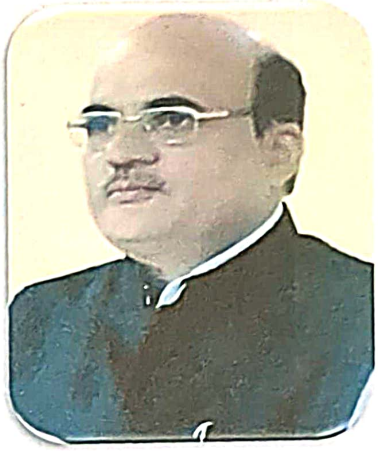

डॉ. शंकर मुनि राय
विभागीय प्रभारी

डॉ. बालक राम चौकसे
अतिथि प्राध्यापक

डॉ. महेन्द्र कुमार नगपुरे
अतिथि प्राध्यापक

डालेश्वरी साहू
जनमागीदारी प्राध्यापक

खबरों में संस्कृत विभाग

दिग्विजय कॉलेज का प्रयास

प्रदेश का पहला कॉलेज, जहां संस्कृत में होती है पढ़ाई

यहां रग-रग में है संस्कृत

[illegible]

यहीं है संस्कृत के प्राध्यापक

[illegible]

पत्रिका

राजनांदगांव @ पत्रिका

[illegible]

गिरावट सौ फीसदी

[illegible]

गीता का अध्याय कंठस्थ कर लिया

[illegible]

बेहतर हो रहा

[illegible]

सम्मेलन में दिग्विजय कॉलेज की सराहना

राजनांदगांव कार्यालय

20-1-16

राजनांदगांव. संस्कृत भारती के प्रांतीय सम्मेलन में दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के विद्यार्थियों ने अपनी सहभागिता से लोगों को काफी प्रभावित किया. विभागीय प्रभारी डॉ. शंकर मुनि राय के साथ संस्कृत पीजी के कुल 24 छात्र-छात्राओं ने शोभा यात्रा के साथ संस्कृत गीत गाते हुए सम्मेलन में अपनी उपस्थिति दी. साथ ही संस्कृत के महत्व और उसके अध्ययन-अध्यापन में आने वाली कठिनाइयों के बारे में संस्कृत भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष से चर्चा की. यहां के विद्यार्थियों की सक्रियता को देखते हुए सम्मेलन की भोजन व्यवस्था एवं अन्य गतिविधियों की जिम्मेदारी भी सौंपी गई, जिसे विद्यार्थियों ने गरिमामय अनुशासन के साथ सम्पन्न किया.

सम्मेलन के अंत में संस्कृत भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. चांदकिरण सलूजा ने दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के बारे में विशेष रुचि के साथ जानकारी ली और यहां संस्कृत माध्यम से होने वाली पढ़ाई और परीक्षा प्रणाली की सराहना की. डॉ. शंकर मुनि राय ने उन्हें अपनी संस्था में आमंत्रित किया, जहां आने का उन्होंने आश्वासन भी दिया. इस सम्मेलन में प्रदेश भर के संस्कृत संस्थानों के शिक्षक-छात्र, प्राध्यापक और विद्यार्थी शामिल हुए जिसमें दिग्विजय महाविद्यालय की सहभागिता सर्वाधिक थी. सम्मेलन में संस्कृत भारती के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. हम्बर्डे, संस्कृत विद्यामंडलम के अध्यक्ष डॉ. गणेश कौशिक और संस्कृत के प्राचार्य डॉ. [illegible] कुमार शुक्ला [illegible] संस्कृत विद्वान शामिल हुए.

दिग्विजय कॉलेज में संस्कृत में व्याख्यान

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में विशेष अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया. वैदिक और लौकिक संस्कृत पर आधारित इस व्याख्यान में इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय की संस्कृत प्राध्यापक डॉ. श्रीमती पूर्णिमा केलकर ने मुख्य वक्ता के रूप में व्याख्यान दिये. अपने दो घंटे के व्याख्यान में डॉ. केलकर ने भारतीय साहित्य और संस्कृति के विकास में संस्कृत की महत्वपूर्ण भूमिका का भी उल्लेख किया. आपने कहा कि संस्कृत को कठिन भाषा होने का भ्रम त्यागने की आवश्यकता है. इसकी सरलता की प्रकृति पर आपने कहा कि संस्कृत की वैय्याकरणिक प्रकृति बहुत ही सरल और सुगम है. वाक्य रचना से लेकर उसकी क्रिया और वाक्य विन्यास की स्वाभाविक प्रकृति को आपने अत्यंत ही सहज ढंग से विद्यार्थियों को समझाया. व्याख्यान के प्रारंभ में विद्यार्थियों द्वारा सरस्वती वंदना का सस्वर पाठ कर पूजा अर्चना की गई. विभागीय प्रभारी डॉ. शंकर मुनि राय ने मुख्य अतिथि का स्वागत परिचय दिया. पूरी तरह संस्कृत में आयोजित इस कार्यक्रम का संचालन एम. ए. अंतिम के छात्र श्री [illegible] कुमार ने किया. कार्यक्रम के अंत में डॉ. [illegible] ने आभार प्रकट किया.

विभागीय गतिविधियाँ

संस्कृत सप्ताह में शोभा यात्रा

वसंतोत्सव

संस्कृत संभाषण शिविर का उद्घाटन

1. विभाग का परिचय :

- स्थापना वर्ष : स्नातक–1957
  स्नातकोत्तर–2003
- स्वीकृत पद : प्राध्यापक–01
  सहायक प्राध्यापक–2
- संचालित विषय – स्नातक एवं स्नातकोत्तर

क – विभिन्न कक्षाओं में छात्र संख्या सत्र–2015–16

- विद्यार्थियों की संख्या : स्नातक–88
- स्नातकोत्तर – 39 (20+19)
- गत वर्ष (सत्र–2014–15) का परीक्षाफल 100%

ख – विभाग में कार्यरत शिक्षकों की संख्या–

- प्रभारी : डॉ. शंकर मुनि राय
- अतिथि व्याख्याता : 1. डॉ. बालकराम चौकसे
  2. डॉ. महेन्द्र नगपुरे
- जनभागीदारी व्याख्याता : कुमारी डालेश्वरी साहू

ग – स्नातक एवं स्नातकोत्तर परिषद

- **संस्कृत साहित्य परिषद का गठनः**

प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह की अध्यक्षता में प्रावीण्य सूची के आधार पर संस्कृत साहित्य परिषद का गठन निम्नानुसार किया गया–

अध्यक्ष	– श्री शिवकुमार साहू (स्नातकोत्तर अंतिम वर्ष)
उपाध्यक्ष	– कु. भारती कंवर (स्नातकोत्तर अंतिम वर्ष)
सचिव	– कुमारी गरिमा सिंह (स्नातकोत्तर पूर्व)
सहसचिव	– कुमारी लक्ष्मी (स्नातकोत्तर पूर्व)
कार्यकारी सदस्य :	गुलाबचंद कोसा, हुपेन्द्र कुमार दूबे, पारस कुमार, गोल्डी रानी, खिलेश्वरी, सुमित्रा गुप्ता,हितेश्वरी, लोमेश कुमार, नीरज कुमार, पूजा चंधरी।

2. **पाठ्यक्रम गतिविधियां–**

क – सत्रारंभ में ही पाठयक्रम समिति की बैठक आयोजित कर विभाग की अध्यापन सामग्री की समीक्षा की गई। विषय की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए पुराने पाठयक्रम को विलोपित करने का निर्णय लिया गया और निम्नलिखित पाठ्य सामग्री जोड़ी गई–

(क) – वैदिक संस्कृति (ख) – संस्कृत के आधुनिक कवि और उनके काव्य

(ग) –छत्तीगझढ़ के धार्मिक स्थल।

समिति के विषय–विशेषज्ञ थे–

- डॉ. रामकिशोर मिश्र, प्राध्यापक, संस्कृत महाविद्यालय, रायपुर
- डॉ. जानकी शरण पाण्डेय, प्राध्यापक, कल्याण महाविद्यालय,भिलाई

ख– पालक सम्मेलन – दिनांक 25 12. 2016. को प्राचार्य महोदय की अध्यक्षता में विभागीय पालकों की बैठक आयोजित हुई जिसमें 7 विद्यार्थियों के पालकों ने महाविद्यालय में संस्कृत माध्यम से हो रहे अध्यापन कार्य की सराहना की।

3. **शिक्षण : सीखना एवं मूल्यांकन–**

- **प्रवेश नियम–** पिछली परीक्षा के प्राप्तांक के आधार पर गुणानुकम के तैयार किया गया जिसमें शासन के नियमानुसार एसटी, एसी, ओबीसी और महिलाओं के लिए निर्धारित सीट सुरक्षित किये गये। इस प्रकार प्रवेशत छात्र–छात्राओं का विवरण इस प्रकार है–

2015–16	बी.ए.भाग–1.	46
	बी. ए. भाग–2	23
	बी.ए.भाग–3	19
	एम.ए. पूर्व	20
	एम. ए. अंतिम	19

उल्लेखनीय है कि इस सत्र में कीड़ा ,एनसीसी अथवा अन्य विशेष उपलब्धियों के लिए निर्धारित कोटे में एक भी प्रवेश नहीं मिला।

- **शिक्षक की योग्यता एवं उपलब्धियां–** विभाग के दो अतिथि व्याख्याता डॉ. बालकराम चौकसे, डॉ. महेन्द्र नगपुरे और जनभागीदारी शिक्षिका कुमारी डालेश्वरी साहू ने संस्कृत भारती, रायपुर के सहयोग से आयोजित 15 दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर में सफलता पूर्वक भाग लिये।

- डॉ. बालकराम चौकसे ने चुटकुले पर आधारित दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी में भाग लेकर अपने शोधपत्र का वाचन किया।
- मूल्यांकन विधि एवं सुधार–इस सत्र से परीक्षा प्रणाली में ग्रेडिंग पद्धति लागू होने के निर्णय से प्रश्नपत्र का विभाजन तीन खंडों अ, ब और स में किया गया है। इसको ध्यान में रखते हुए प्रथम खंड अतिलघु उत्तरीय प्रश्न, द्वितीय खंड में लघु उत्तरी और तृतीय खंड में आलोचनात्मक प्रश्नों की योजना की गई है।
  अतः सत्र में नये पैटर्न पर प्रश्न नमूने तैयार कर जाँच परीक्ष ली गई और मूल्यांकनोपरांत समुचित सुझाव दिये गये।
- विभागीय विस्तार गतिविधि के अंतर्गत इस सत्र में स्थानीय बख्शी उच्चतर माध्यमिक शाला में संस्कृत संभाषण का प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही रायपुर में 17 जनवरी 2016 को आयोजित प्रांतीय संस्कृत सम्मेलन में विद्यार्थियों ने संस्कृत की उपयोगिता और वर्त्तमान स्थिति पर अपने विचार रखे, जिसे सराहा गया।

4. अधोसंरचना एवं सीखने के संसाधन–

- विभाग में उपलब्ध सुविधा–
- कम्प्यूटर
- इटरनेट (वाई–फाई सुविधा युक्त)
- संस्कृत लैब
- कम्प्यूटर द्वारा नई व्यवस्था के तहत विद्यार्थियों को पढ़ाने का काम इस सत्र से प्रारंभ किया गया है। इस योजना में संस्कृत संभाषण सहित अन्य पाठ्य सामग्री डाउनलोड कर सामूहिक अध्ययन–अध्यापन का काम किया जा रहा है।
- विगत सत्र से गीता के बारहवें अध्याय को एम.ए. पूर्व के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। जिसका सामूहिक पाठ किया जाता है।
- विभाग के सामने खाली पड़े स्थान में 'संस्कृत बाटिका' विकसित की गई है।

5. विद्यार्थियों का सहयोग एवं विकास–

- विद्यार्थियों की सुविधा के लिए महाविद्यालय के ग्रंथालय के अतिरिक्त विभागीय ग्रंथालय से भी पुस्तकें उपलब्ध कराई जा रही है। साथ की नवीन पाठ्यक्रम से संबंधित प्रश्नोत्तर विभागीय प्राध्यापकों द्वारा उपलब्ध कराई गई हैं।

6. प्रबंधन नेतृत्व–

- प्राध्यापक सशक्तिकरण योजनाएं– विभागीय प्राध्यपकों को व्यक्तिगत विकास के लिए सत्रारंभ में ही 15 दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का आयोजन किया जाता है,

जिसमें सभी की सहभागिता अनिवार्य की गई है। इस योजना के तहत निम्नलिखित प्राध्यापकों ने शिविर में सहभागिता कर प्रमाण–पत्र प्राप्त किये–

क – डॉ. बालकराम चौकसे (अतिथि प्राध्यापक)
ख – कुमारी डालेश्वरी साहू (जनभागीदारी प्राध्यापक)

7. नवाचार एवं पर्यावरण–

- विभागीय स्वच्छता के लिए प्रत्येक शनिवार को प्राध्यापकों सहित विद्यार्थियों का दल संस्कृत वाटिका सहित विभागीय उपकरणों की पड़ताल कर व्यवस्थित करता है। यह योजना विगत सत्र से ही लागू है।
- विभागीय कम्प्यूटर की सहायता से संस्कृत के अनुपलब्ध पाठ्य सामग्री उपलब्ध कर विद्यार्थियों में वितरित की जाती है। साथ ही खाली समय में सामूहिक गीतापाठ या अन्य पाठ्य सामग्री का सस्वर पाठ की व्यवस्था सुनिश्चित है।
- **नवाचार**– दैनिक जीवन में संस्कृत के बढ़ते महत्व को ध्यान में रखकर इस सत्र में पाठ्यकम में संशोधन कर निम्नलिखित सामग्री जोड़ी गई–
- (क) – वैदिक संस्कृति (ख) – संस्कृत के आधुनिक कवि और उनके काव्य (ग) –छत्तीगढ़ के धार्मिक स्थल।
- **नवाचार– विभागीय स्तर पर छत्तीसगढ़ के धार्मिक स्थलों पर आधारित एक लघु पुस्तिका प्रकाशित करने की योजना प्रस्तावित है।**

....

विस्तार कार्यक्रम

प्रांतीय संस्कृत सम्मेलन में दिग्विजय कॉलेज की सराहना

संस्कृत भारती के प्रांतीय सम्मेलन में संस्कृत विभाग के विद्यार्थियों ने अपनी सहभागिता से लोगों को काफी प्रभावित किया। विभागीय प्रभारी डॉ. शंकर मुनि राय के साथ संस्कृत पीजी के कुल 24 छात्र–छात्राओं ने शोभा यात्रा के साथ संस्कृत गीत गाते हुए सम्मेलन में अपनी उपस्थिति दी। साथ ही संस्कृत के महत्व और उसके अध्ययन–अध्यापन में आने वाली कठिनाइयों के बारे में 'संस्कृत भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष से चर्चा की। यहां के विद्यार्थियों की सकियता को देखते हुए सम्मेलन की भोजन व्यवस्था एवं अन्य गतिविधियों की जिम्मेदारी भी सौंपी गई, जिसे विद्यार्थियों ने गरिमामय अनुशासन के साथ सम्पन्न किया।

सम्मेलन के अंत में संस्कृत भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. चांदकिरण सलूजा ने दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के बारे में विशेष रूचि के साथ जानकारी ली और यहां संस्कृत माध्यम से होने वाली पढ़ाई और परीक्षा प्रणाली की सराहना की। डॉ. शंकर मुनि राय ने उन्हे अपनी संस्था में आमंत्रित किया, जहां आने का उन्होंने आश्वासन भी दिया।

उल्लेखनी है कि पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. शिव कुमार पाण्डेय की अध्यक्षता में 17 जनवरी को आयोजित यह सम्मेलन रायपुर के रोहिणिपुरम् में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के विशेष अतिथि थे अखिल भारतीय 'संस्कृत भारती' के अध्यक्ष डॉ. चांदकिरण सलूजा।

इस सम्मेलन में प्रदेश भर के संस्कृत संस्थानों के शिक्षक–छात्र, प्राध्यापक और विद्यार्थी शामिल हुए जिसमें दिग्विजय महाविद्यालय की सहभागिता सर्वाधिक थी। सम्मेलन में संस्कृत भारती के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. हम्बर्डे, संस्कृत विद्यामंउल के अध्यक्ष डॉ. गणेश कौशिक और संस्कृत के प्राचार्य डॉ. अंजनी कुमार शुक्ला सहित अनेक संस्कृत विद्वान शामिल हुए।

सम्मेलन में दिग्विजय कॉलेज की सराहना

20-1-16

राजनांदगांव. संस्कृत भारती के प्रांतीय सम्मेलन में दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के विद्यार्थियों ने अपनी सहभागिता से लोगों को काफी प्रभावित किया. विभागीय प्रभारी डॉ. शंकर मुनि राय के साथ संस्कृत पीजी के कुल 24 छात्र-छात्राओं ने शोभा यात्रा के साथ संस्कृत गीत गाते हुए सम्मेलन में अपनी उपस्थिति दी. साथ ही संस्कृत के महत्व और उसके अध्ययन-अध्यापन में आने वाली कठिनाइयों के बारे में संस्कृत भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष से चर्चा की. यहां के विद्यार्थियों की सक्रियता को देखते हुए सम्मेलन की भोजन व्यवस्था एवं अन्य गतिविधियों की जिम्मेदारी भी सौंपी गई, जिसे विद्यार्थियों ने गरिमामय अनुशासन के साथ सम्पन्न किया.

सम्मेलन के अंत में संस्कृत भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. चांदकिरण सलूजा ने दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के बारे में विशेष रूचि के साथ जानकारी ली और यहां संस्कृत माध्यम से होने वाली पढ़ाई और परीक्षा प्रणाली की सराहना की. डॉ. शंकर मुनि राय ने उन्हे अपनी संस्था में आमंत्रित किया, जहां आने का उन्होंने आश्वासन भी दिया. इस सम्मेलन में प्रदेश भर के संस्कृत संस्थानों के शिक्षक-छात्र, प्राध्यापक और विद्यार्थी शामिल हुए जिसमें दिग्विजय महाविद्यालय की सहभागिता सर्वाधिक थी. सम्मेलन में संस्कृत भारती के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. हम्बर्डे, संस्कृत विद्यामंडल के अध्यक्ष डॉ. गणेश कौशिक और संस्कृत के प्राचार्य डॉ. अंजनी कुमार शुक्ला सहित अनेक संस्कृत विद्वान शामिल हुए.

संस्कृत संभाषण शिविर

'संस्कृत जीवनस्य कला'– डॉ. आर. एन. सिंह

दिग्विजय महाविद्यालय में 15 दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का उद्घाटन प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह ने किया। इस अवसर पर आपने अपने संबोधन में कहा कि 'संस्कृत नकेवलंभाषा अपितु जीवनस्य कलास्ति' अर्थात् संस्कृत सिर्फ भाषा ही नहीं वल्कि जीवन जीने की कला भी है। अतः इसकी शुद्धता पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। संस्कृत के मंत्रों के गलत उच्चारण–पाठ से हमारे जीवन पर गलत प्रभाव पड़ता है।

शिविर के संयोजक और विभागीय प्रभारी डॉ. शंकर मुनि राय ने कहा कि संस्कृत भारतीय संस्कृति के संस्कार की भाषा है। आज विश्वस्तर पर इसके पढ़ते महत्व को देखते हुए यह महाविद्यालय इसे व्यावहारिक भाषा का रूप देने के लिए विगत तीन वर्षो से लगातार संभाषण शिविर का आयोजन करते आ रहा है। 'संस्कृत भारती' के सहयोग से आयोजित इस शिविर में प्रशिक्षक श्री वंशीधर द्विवेदी और श्री राकेश वर्मा का लगातार सहयोग मिलता रहा है।

इस अवसर पर अतिथि प्राध्यापक डॉ. महेन्द्र नगपुरे, डॉ. बालकराम चौकसे, कुमारी डालेश्वरी साहू और संस्कृत भारती के राजनांदगांव जिला सह संयोजक श्री नरेन्द्र कुमार भी उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि दिग्विजय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर संस्कृत की पढ़ाई का माध्यम संस्कृत हो जाने से इस शिविर का महत्व बढ़ गया है।

संस्कृत सप्ताह का आयोजन

संस्कृत दुनिया की प्राचीनतम भाषा–डॉ. सिंह

दिग्विजय कॉलेज के संस्कृत विभाग में प्रत्येक वर्ष की भांति इस साल भी संस्कृत सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है। इसका उद्घाटन करते हुए प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह ने विद्यार्थियों को संस्कृत विषयक रोजगार की जानकारी दी। आपने कहा कि संस्कृत दुनिया की प्राचीनतम भाषा है और इसका अध्ययन आज समय की मांग है। कम्प्यूटर युग में संस्कृत की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए आपने कहा कि दुनिया के सभी विकसित राष्ट्र आज संस्कृत के महत्व को समझने लगे हैं। यही कारण है कि इस विषय का विद्यार्थी भारत सहित विदेशों में भी रोजगार प्राप्त कर रहा है।

संस्कृत सप्ताह के अन्तर्गत विभाग के विद्यार्थीयों द्वारा शोभयात्रा निकाल कर स्थानीय देवालयों में मंत्रोच्चार के साथ पूजा–अर्चना किया गया। इसी प्रकार नगर शासकीय पदुम लाल पुन्ना लाल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में जाकर वहां संस्कृत को सहज ढंग से अध्ययापन करने के तरीके बतलाये गए। अतिथि प्राध्यापक डॉ. महेन्द्र नगपुरे, डॉ. बालकराम चौकसे और कुमारी डालेश्वरी साहू ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

अतिथि व्याख्यान

8. **सीपी.ई योजना के अन्तर्गत किये गये आयोजन :**

- संस्कृत सप्ताह के अन्तर्गत महाविद्यालय परिसर स्थित श्रीगणेश मंदिर, श्री राधाकृष्ण मंदिर और श्री हनुमान मंदिर में सामूहिक पूजा की गई। नगर के बख्शी कन्या उच्चतर विद्यालय में विभाग के छात्र–छात्राओं द्वारा संस्कृत वार्त्तालाप संबंधी जानकारी देते हुए बातचीत करने का प्रशिक्षण दिया।

- प्रत्येक साल की तरह इस साल भी संस्कृत भारती, रायपुर के सहयोग से सितंबर माह में 15 दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें विभाग के विद्यार्थियों सहित प्राध्यापकों ने प्रशिक्षण लिया। प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह की अध्यक्षता में इसका समापन 26 सितंबर 2016 को हुआ।
- संस्कृत लैब को आकर्षक बनाने के उद्देश्य से संस्कृत भाषा और साहित्य के महत्व को दर्शानेवाले 100 नग पोस्टर की फ्रेमिंग कराई गई।

9. **विस्तार गतिविधियां –**

- विस्तार गतिविधि के तहत स्थानीय बख्शी स्कूल में दो दिवसीय संस्कृत संभाषण प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही 17 जनवरी 2016 को रायपुर में आयोजित प्रांतीय संस्कृत सम्मेलन में छात्र–छात्राओं नें अपनी सहभागिता दी।
- 15 दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का आयोजन किया गया।

10. **कमजोर छात्रों एवं मेधावी छात्रो के लिये किये गये प्रयास–**

- विगत वर्ष के प्रश्नपत्रों को हल कराया गया तथा तथा विभाग के **10** स्नातकोत्तर तथा स्नातक के **08** .छात्र–छात्राओं को रिमेडियल कोचिंग दी गई।

कमजोर छात्रों के लिए विशेष कोचिंग

11. **स्नातक स्तर पर विशेषकर स्नातक प्रथम वर्ष के परीक्षा परिणाम में सुधार हेतु किए गए प्रयास की जानकारी।**

- विगत वर्ष के प्रश्नपत्रों को हल कराया गया तथा लिखित सामग्री प्रश्नोत्तर प्रदान की गया।

12. **विभाग के कितने छात्रो को इस वर्ष रोजगार प्राप्त हुआ, उसकी सूची। – निरंक**

13. विभाग का शैक्षणिक रिकार्ड।

सत्र	कक्षा	छात्र–छात्राएं	परीक्षा परिणाम
2013–14	बी.ए.भाग–1.	.31	
	बी. ए. भाग–2	36	
	बी.ए.भाग–3	45	
	एम.ए. पूर्व	43...	83 प्रतिशत
	एम. ए. अंतिम	36...	100 प्रतिशत
2014–15	बी.ए.भाग–1.	52	62 प्रतिशत
	बी. ए. भाग–2	27	78 प्रतिशत
	बी.ए.भाग–3	17	36 प्रतिशत
	एम.ए. पूर्व	25...	92 प्रतिशत
	एम. ए. अंतिम	35...	100 प्रतिशत
2015–16	बी.ए.भाग–1.	46	
	बी. ए. भाग–2	23	
	बी.ए.भाग–3	19	
	एम.ए. पूर्व	20...	100 प्रतिशत
	एम. ए. अंतिम	19...	100 प्रतिशत

राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन में विभाग का योगदान।

- प्रत्येक शनिवार को विभाग के प्राध्यापक एवं छात्रों द्वारा विभागीय सफाई का नियमित कार्यक्रम आयोजित है।
- इसी कम में विभाग के सामने संस्कृत वाटिका विकसित की गई जिसमें धृतकुमारी के पौधे लगाये गये है।
  महाविद्यालय विकास एवं प्रबंधन में विभाग के प्राध्यापकों का योगदान (व्यक्तिगत योगदान सहित)
- छात्रसंघ चुनाव, प्रवेश समिति, स्वच्छता मिशन, वार्षिकोत्सव आयोजित प्रतियोगताओं में निर्णायक के रूप में योगदान दिया गया।

14. महाविद्यालय द्वारा संचालित फ्री संस्कृत कोचिंग एवं Entry in Service में आपके विभाग के कितने विद्यार्थियों ने भागीदारी दी, कक्षावार संख्या देवें।

- 15 दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का आयोजन
  स्नातकोत्तर पूर्व : 18
  स्नातकोत्तर अंतिम : 17
- Entry in Service
  स्नातकोत्तर अंतिम : 04

15. महाविद्यालय की प्रज्ञा 2015 पत्रिका में आपके विभाग द्वारा कितनी रचनाएं दी गयी।
———————निरंक——

16. स्नातकोत्तर स्तर पर शोध के लिये किए गए आपके प्रयास एवं उपलब्धियां।
——————————निरंक——————

17. आपके विभाग के प्राध्यापकों का अन्य संस्थाओं के साथ Colleboration की जानकारी। ——————————निरंक—————————

18 आपके विभाग के कितने विद्यार्थियों ने खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियों, साहित्यिक गतिविधियों एवं अन्य गतिविधियों में भागीदारी संख्या एवं उपलब्धियों का उल्लेख करें———**निरंक**

नवाचार — दैनिक जीवन में संस्कृत के बढ़ते महत्व को ध्यान में रखकर इस सत्र में पाठ्यक्रम में संशोधन कर निम्नलिखित सामग्री जोड़ी गई—

(क) — वैदिक संस्कृति

(ख) — संस्कृत के आधुनिक कवि और उनके काव्य

(ग) —छत्तीसगढ़ के धार्मिक स्थल।

....

संस्कृत साहित्य परिषद्

शिवकुमार साहू
अध्यक्ष

भारती कंवर
उपाध्यक्ष

गारिम सिंह
सचिव

लक्ष्मी
सह—सचिव

शासकीय दिग्विजय स्नातकोत्तर महाविद्यालयः

राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़म्)

आमंत्रण-पत्रम्

पाठयेम संस्कृतं जगति सर्वमानवान् ।
प्रापयेम भारतं सपदि परम वैभवम् ॥

आत्मीय बन्धो !

सहर्षं सूचयामः यत् शासकीय दिग्विजय महाविद्यालये संस्कृत विभागे समायोजिते पंचदशदिवसीय संस्कृतसंभाषण शिविरस्य समारोपकार्यक्रमः जायमानः अस्ति ।

भवन्तः सादरामंत्रिताः सन्ति ।

मुख्य अतिथिः :- माननीयः श्री मधुसूदन यादव महोदयः
(महापौरः राजनांदगाँव नगरम्)

अध्यक्षः :- माननीया श्रीमती सरोजनी बंजारे महोदया

कार्यक्रमः

कार्यक्रम स्थानम् :- शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय सभागारम् ।
दिनांकः :- २६ सितम्बर २०१५ (शनिवासरः)
समयः :- अपराह्न ०२ वादनं

-: विनीतो :-

डॉ. शंकर मुनि रायः
प्रभारी, संस्कृत विभागः

डॉ. आर.एन.सिंहः
प्राचार्यः

शासकीय दिग्विजय स्नातकोत्तर महाविद्यालयः राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़म्)

संस्कृत विभागः

प्रमाण - पत्रम्

प्रमाणीक्रियते यत् श्री /श्रीमती / सुश्री वंशीधर द्विवेदी

आत्मजः / आत्मजा श्री ________ शासकीय दिग्विजय महाविद्यालये संस्कृत विभागे समायोजिते पंचदशदिवसीय संस्कृतसंभाषण शिविरे प्रशिक्षकः/ प्रशिक्षणार्थि रूपेण सोत्साहं भागं गृहीत्वान / गृहीतवती । महाविद्यालयेनसह संस्कृत भारती एतेषां उज्ज्वल भविष्यस्य कामना करोति ।

डॉ. शंकर मुनि रायः
प्रभारी, संस्कृत विभागः
दिनांक 26.9.2015

श्रीमती सरोजनी बंजारे
अध्यक्षः
महाविद्यालय जनभागीदारी समिति

डॉ. आर.एन.सिंहः
प्राचार्यः

शासकीय दिग्विजय स्नातकोत्तर महाविद्यालयः राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़म्)

संस्कृत विभागः

प्रमाण - पत्रम्

प्रमाणीक्रियते यत् श्री /श्रीमती / सुश्री राकेश वर्मा

आत्मजः / आत्मजा श्री ________ शासकीय दिग्विजय महाविद्यालये संस्कृत विभागे समायोजिते पंचदशदिवसीय संस्कृतसंभाषण शिविरे प्रशिक्षकः/ प्रशिक्षणार्थि रूपेण सोत्साहं भागं गृहीत्वान / गृहीतवती । महाविद्यालयेनसह संस्कृत भारती एतेषां उज्ज्वल भविष्यस्य कामना करोति ।

डॉ. शंकर मुनि रायः
प्रभारी, संस्कृत विभागः
दिनांक 26.9.2015

श्रीमती सरोजनी बंजारे
अध्यक्षः
महाविद्यालय जनभागीदारी समिति

डॉ. आर.एन.सिंहः
प्राचार्यः